जायसी का अध्यात्म

डॉ० कुमार मनीष, अतिथि शिक्षक, हिंदी विभाग, जी० बी० कॉलेज नवगछिआ, ति० माँ० भा० वि० भागलपुर-८१२००७

बीज शब्द: सूफी, साधक, ब्रह्म, प्रतीक, रूपक

शोध सार: जायसी सूफी अध्यात्म तत्त्व के प्रमुख साधक थे। राजा रत्नसेन और राजकुमारी पद्मावती की प्रेम कथा के ब्याज से महाकाव्य में सूफी अध्यात्म तत्त्व का विशद निरूपण हुआ है। नायक सूफी साधना के मार्ग में साधक, नायिका ब्रह्म और प्रतिनायक माया के प्रतीक पात्र होते हैं। सूफी साधना में साधक आत्मा और साध्य परमात्मा होते हैं। इस्लाम के अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड में एक ज्योति है।

मलिक मुहम्मद जायसी हिंदी साहित्य के भक्तियुग के प्रमुख कवियों में से एक हैं। आपकी काव्य साधना का लक्ष्य मानव समाज को एकता के सूत्र में पिरोना है।

आपने इस्लाम और हिन्दू धर्म के अध्यात्म तत्त्व को अपनी काव्य-रचना में समाहित किया है। जायसी सूफी अध्यात्म तत्त्व के प्रमुख साधक थे। इस साधना पद्धत्ति में साधक ईस्वर को प्रियतमा के रूप में देखता है। सूफी कवि लौकिक एवम ऐतिहासिक कथाओं में आध्यात्मिक तत्त्व का निरूपण करते हैं ।

मलिक मुहम्मद जायसी ने राजा रत्नसेन और राजकुमारी पद्मावती की प्रेम कथा के ब्याज से महाकाव्य में सूफी अध्यात्म तत्त्व का विशद निरूपण किया है। इस कथा के द्वारा सांसारिक प्रेम में अध्यात्मिक प्रेम की अभिव्यंजना हुई है।

सूफी साधना इस्लाम की साधना पद्धत्ति से भिन्न है। इस साधना में हृदय की पवित्रता पर बल दिया जाता है। साधक ईस्वर के प्रेम में घर से बाहर निकलता है. और अनेक प्रकार के कष्टों को झेलकर लक्ष्य की प्राप्ति करता है। महाकाव्य में यह साधना प्रेम त्रिकोण के माध्यम से चित्रित होता है. जिसमें एक नायक, एक नायिका और एक प्रतिनायक होते हैं. नायक सूफी साधना के मार्ग में साधक,नायिका ब्रह्म और प्रतिनायक माया के प्रतीक पात्र होते हैं। यह संपूर्ण साधना प्रतीक के माध्यम से महाकाव्य में अभिव्यंजित किया जाता है. जायसी ने रूपक में 'उपसंहार' में इस रहस्य का 'उद्द्घाटन किया है ।

इस रूपक में तन को चित्तौरगढ़ । मन को राजा, हृदय को सिंहलगढ़ और निर्मल बुद्धि को पद्मिनी कहा गया है। हीरामन सुवा निर्गुण मार्ग बताने वाला गुरू है। जो साधक को ब्रह्म तक पहुँचाता है। नागमती संसार का जंजाल है, जो इसके चित्त में नहीं बँधता है, वो ही बचता है। राघवचेतन शैतान है, सुल्तान अलाउद्दीन माया का प्रतीक है। जो साधक को ब्रह्म तक पहुँचने में बाधा पहुँचाता है। इस प्रकार रूपक में कवि ने सूफी साधना के सभी तत्वों का विशद वर्णन किया है.

"तन चितउर, मन राजा कीन्हा। हिय सिंघल,बुधि पदमिनि चीन्हा॥

गुरू सुआ जेइ पंथ देखावा । बिनु गुरु जगत को निरगुन पावा।।
नागमती यह दुनिया धंधा। बाँचा सोइ न एहि चित बंधा॥
राघव दूत सोई सैतानू । माया अलाउदी सुलतानू॥
प्रेम कथा एहि भाँति बिचारहु । बूझि लेहु जौ बूझै पारहु।।"[1]

जायसी को भारतीय अध्यात्म साधना का गहरा एवं व्यापक ज्ञान था । उन्होंने तत्कालीन भारतवर्ष की सभी प्रकार की साधना पद्धत्तियों का ज्ञानार्जन किया था। उनकी रचनाओं में बौद्ध पंथ, नाथ पंथ, कबीर मत, इस्लाम का अध्यात्म दर्शन, जैन दर्शन, सूफी मत, वैदिक दर्शन आदि का निपुणता पूर्वक समाहार है। कवि ने ' पद्मावत' में धर्म और दर्शन को कविता के चौपाई-दोहों में व्यक्त कर, उसे जनमानस का कंठहार बना दिया है। उसमें लोक और इतिहास का सम्मिश्रण है। इसमें लौकिकता और आध्यात्मिकता के रस का सागर उमड़ पड़ा है. जिस कारण जायसी की कविता भारतीय अध्यात्म तत्त्व का महत्वपूर्ण संग्रह बन पड़ी है।

महाकाव्य के नायक प्रच्छन्न रूप से कवि होते हैं। 'पद्मावत' के नायक राजा रत्नसेन सूफी साधक हैं । वे नायिका पद्मावती के रूप सौंदर्य का बखान सुनकर मोहित हो जाते हैं। उनके हृदय में परम सौंदर्य के प्रति प्रेम जागृत होता है। साधक के हृदय में परम सत्ता के प्रति प्रेम की लौ जलती है । जिसकी ज्योति में उन्हें सर्वत्र ब्रह्म का दर्शन होता है ।

''मैं जानेउँ तुम्ह मोही माहाँ। देखौं ताकि तौ हौ सब पाहाँ। ''[2]

जायसी का मत है कि आत्मा और परमात्मा का चिर सम्बन्ध होता है। आत्मा, परम सत्ता में विलीन होना चाहती है। साधक की साधना का चरम फल आत्मा को परमात्मा तक पहुँचाना है। सूफी साधना में साधक आत्मा और साध्य परमात्मा होते हैं। आत्मा और परमात्मा के परम प्रेम की गूढ़ व्यंजना रहस्यवाद कहलाता है. कवि 'पद्मावत' में प्रेम के सम्बन्ध में लिखते हैं :

''भलेहि पेम है कठिन दुहेला । दुइ जग तरा पेम जेइ खेला॥
दुख भीतर जो पेम मधु राखा। नग नहिं मरन सहै जो चाखा॥
जो नहिं सीस पेम पथ लावा। सो प्रिथिमी महँ काहे क आवा॥
अब मैं पंथ पेम सिर मेला। पाँव न ठेलु, राखु कै चेला॥
पेम बार सो कहै जो देखा। जो न देख का जान बिसेखा।
तौ लगि दुख पीतम नहिं भेंटा। मिलै, तो जाइ जनम दुख मेटा॥
जस अनूप, तू बरनेसि, नखसिख बरनु सिंगार।
है मोहिं आस मिलै कै, जौ मेरवै करतार ॥''[3]

;

मालिक मुहम्मद जायसी 'मानसरोदक खंड ' में लिखते हैं कि एक बार पद्मावती सखियों संग मानसरोवर में स्नान के लिए जाती हैं । वहाँ स्नान के क्रम में एक सखी का हार खो जाता है। सभी सखियाँ मिलकर जल में हार को ढूँढ़ती हैं। इस स्नान क्रीड़ा में अध्यात्म साधना के स्वरुप का चित्रण हुआ है।

यहाँ पद्मावती ब्रह्म का और मानसरोवर साधक के प्रतीक हैं। मानसरोवर कहता है कि उसकी जो इच्छा थी, वह पाया । पद्मावती पारस के रूप में यहाँ आई।

मैं उसके स्पर्श से निर्मल हुआ। रूप के दर्शन से रूप की प्राप्ति हुई। उसके शरीर से मलय की बयार के स्पर्श से शीतलता की प्राप्ति हुई । तन की तपन बूझ गई ।

नहीं जानता हूँ कि कौन है जो यह सुरभित पवन लेकर आया। जिससे पुण्य दशा हुई और पाप जाता रहा । उसी क्षण हार शीघ्रता पूर्वक ऊपर आ गया। सखियों ने उसे पाया और पद्मावती प्रसन्न हुई। पद्मावती रुपी चन्द्रमा की किरणों को देखकर सखियाँ रुपी कुमुद खिल गईं। जहाँ जिसने उसे देखा, वह उसी के रूप का हो गया।

जैसा सब थे, वैसे रूप उन्होंने पाए।

शशि मुख पद्मावती के लिए सब पदार्थ दर्पण हो गए। उनके नेत्रों को जिसने देखा, वे कमल बन गए। शरीर की छाया से निर्मल जल हो गया। उसे हँसते हुए जिसने देखा, वे हंस हो गए। दाँतों की ज्योति हीरा नग बन गई । इन वस्तुओं ने दर्पण की भाँति पद्मावती के अंगों का प्रतिबिम्ब ग्रहण किया।

''कहा मानसर चाह सो पाई। पारस रूप इहाँ लगि आई ।।
भा निरमल तिन्ह मायँन्ह परसे। पावा रूप रूप के दरसे॥
मलय समीर बास तन आई। भा सीतल, गै तपनि बुझाई।।
न जनौं कौन पौन लेइ आवा। पुन्य दसा भै पाप गँवावा॥

ततखन हार बेगि उतिराना। पावा सखिन्ह चंद बिहँसाना ।।
बिगसा कुमुद देखि ससि रेखा। भै तहँ ओप चहाँ जोइ देखा।।
पावा रूप रूप जस चहा। ससि मुख जनु दरपन होइ रहा।।
नयन जो देखा कवल भा, निरमल नीर सरीर।
हँसत जो देखा हंस भा, दसन जोति नग हीर ॥''[4]

जायसी कहतें हैं कि सभी साधक ब्रह्म की खोज करते हैं। उनमें से किसी एक को ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है। जिन्हें ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है; वे संसार में लौट कर नहीं जाते हैं । इस्लाम के अनुसार संपूर्ण ब्रह्मांड में एक ज्योति है। जो साधक अध्यात्म की ऊंचाईं पर होते हैं, उन्हें एक दृश्य दिखाई देता है। वह दृश्य मानव शरीर से निकलकर अनंत में लुप्त हो जाता है।

जायसी ने 'अखरावट' में अध्यात्म तत्त्व का सुंदरता से निरूपण किया है । वे भक्तिमार्ग की निर्गुण धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रधान कवि थे। इस शाखा के कवियों ने ब्रह्म को घट के भीतर ढूँढ़ा है। कबीर , नानक आदि कवियों ने ईस्वर को शरीर के भीतर देखा था। कवि 'अखरावट' में लिखते हैं :

"सातों दीप, नवौ खंड, आठौ दिसा जो अहिं।
जो बरम्हंड सो पिंड है, हेरत अंत न जाहिं।।"[5]

निर्गुण ज्ञानाश्रयी संतों ने भी इस ज्ञान को इसी प्रकार कहा है।

कबीर कहते हैं :

"खेल ब्रह्माण्ड का पिंड में देखिया।

जगत की भरमना दूर भागी।

बाहरा-भीतरा एक आकाशवत

धरिया में आधार भरपूर लागी।।"[6]

जायसी का मत हिन्दू धर्म के अद्वैतवाद से मिलता है। वे लिखते हैं :

"एक चाक सब पिंडा चढ़े। भाँति भाँति के भांडा गढ़े।।"[7]

उनके मत से बूँद में ही सारा समुद्र समाया हुआ है, यह आश्चर्य जनक बात किसके सम्मुख कही जाए? यह संसार रुपी समुद्र परमात्मा का ही व्यक्त रूप है और मनुष्य एक बूँद की तरह है । जो व्यक्ति परमात्मा को खोजता है, वह अपने आप में ही खो जाता है।

"बुंदहि समुद्र समान, यह अचरज कासौं कहौं?

जो हेरा सो हेरान मुहमद आपुहि आपु महँ ।।"[8]

जायसी कबीर के समान ईस्वर को अपने अंदर ढूँढ़ते हुए कहते हैं :

"पिउ हिरदय महँ भेंट न होई। को रे मिलाव, कहों केहि रोई !"[9]

इस प्रकार, जायसी ने आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध को प्रेमी-प्रेमिका रूप में दिखा कर, जन समाज को सत्य राह दिखाई है।

संदर्भ :

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, जायसी ग्रंथावली, प्रथम संस्करण, इलाहाबाद, जयभारती प्रकाशन,२००५, उपसंहार, पृष्ट सं०-282 दोहा-1
2. वही, नागमती सुवा संवाद खंड, पृष्ट सं०-36, दोहा-9
3. वही, राजा सुवा संवाद खंड, पृष्ट सं०-39, दोहा-7
4. वही, मानसरोदक खंड, पृष्ट सं०-25, दोहा-8
5. वही, अखरावट, पृष्ट सं०-289, दोहा-8
6. द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद, कबीर परिशिष्ट.२, कबीर वाणी पृष्ठ-१९३, पद-२.६१
7. वही, अखरावट, पृष्ट सं०-286, दोहा-5
8. वही, अखरावट, पृष्ट सं०-289, दोहा-7
9. वही, भूमिका, पृष्ट सं०-150